इकाई 15 कट्टरपंथ : कुछ विशेष अध्ययन (Fundamentalism : Some Case Studies)

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 कट्टरपंथ क्या है?

15.3 ईरान में व्याप्त कट्टरपंथ

- 15.3.1 ईरान में राजतंत्र
- 15.3.2 पश्चिम का प्रभाव
- 15.3.3 ईरान में इस्लाम का पुनरुत्थान
- 15.3.4 इस्लामी मूल की ओर वापसी

15.4 अमेरिका में प्रोटेस्टैंट कट्टरपंथ

- 15.4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- 15.4.2 "नव धार्मिक अधिकार आंदोलन"

15.5 सारांश

15.6 शब्दावली

15.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप:

- समझ सकेंगे कि कट्टरपंथी विचारों का उदय कैसे और किन कारणों से होता है;
- ऐसी समान स्थितियों का विश्लेषण कर सकेंगे जहाँ कट्टरपंथ की मौजूदगी मानी जाती है; और
- ईरान और अमेरिका में व्याप्त कट्टरपंथ के बीच भेद कर पाएंगे।

15.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने 'धर्म : सामाजिक स्थिरता और बदलाव' के बारे में पढ़ा। इस इकाई में हम धार्मिक कट्टरपंथ के दो उदाहरण प्रस्तुत कर आपको इस पक्ष की जानकारी देंगे। इस इकाई को हमने दो खंडों में विभाजित किया है। इनमें से एक खंड ईरान में व्याप्त कट्टरपंथ को समर्पित है। इस विषय पर अपनी चर्चा का प्रारंभ हमनें ईरान के इस्लामी राज्य बनने से पहले वहाँ की राजनीतिक-आर्थिक स्थिति की पृष्ठभूमि के प्रस्तुतीकरण से किया है। हमें आशा है इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि इस्लामी पुनरूत्थान के पीछे क्या स्थितियाँ और कारण रहे। इससे आप को कट्टरपंथ की प्रकृति को समझने में भी मदद मिलेगी। इस इकाई के दूसरे भाग में हमने अमेरिका में दक्षिणपंथी धार्मिक आंदोलनों की चर्चा की है, जिनमें धर्म के मूलभूत या अनिवार्य विचारों की ओर ध्यान खींचा गया है। इस आंदोलन के अनुसार धर्म अमेरिकी राष्ट्र और जनता के मार्गदर्शक विचार होने चाहिए। अमेरिका में व्याप्त कट्टरपंथ बिल्कुल भिन्न है। अमेरिका में कोई धार्मिक राज्य नहीं है।

लेकिन दक्षिणपंथी धार्मिक विचार अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था और जीवन में व्याप्त दिखते हैं।

ईरान और अमेरिका के ये दो उदाहरण प्रस्तुत करके हम आप को कुछ सामाजिक स्थितियों के विषय में समझाना चाहते हैं जिनके कारण कट्टरपंथी विचारों ने सिर उठाया।

15.2 कट्टरपंथ क्या है ? (What is Fundamentalism?)

'कट्टरपंथ' शब्द का उल्लेख होते ही हमारे दिमाग में एक आधुनिकतावाद-विरोधी, उदारतावाद-विरोधी और धर्मनिरपेक्षता-विरोधी विचार की तस्वीर उभरती है।

कट्टरपंथ या नवजागरणवाद धार्मिक विवेचकों का उनकी दृष्टि में शुद्ध एवं मौलिक मूल्यों और व्यवहारों की ओर लौटने का प्रयास है।

सामाजिक बदलाव की शक्तियाँ कट्टरपंथ के उदय के लिए महत्वपूर्ण हैं। जब कभी समाज में भारी बदलाव आते हैं और बदलाव के कारण समुदाय में उथल–पुथल होती है तो, बहुधा लोगों में अस्मिता का ह्रास होता है और जड़विहीनता की स्थिति बनती है। इस प्रकार की स्थितियों में लोगों को सांत्वना के लिए जो भी सहारा मिलता है वे उसे पकड़ लेते हैं। कट्टरपंथ किसी अधिक अच्छे पूर्ववर्ती युग की वापसी का वादा करता है। इसके मनोवैज्ञानिक आकर्षण से बचना लोगों के लिए कठिन होता है।

ऐसे अधिक अच्छे युग की वापसी के लिए कट्टरपंथी व्यापक और निरंकुश, कठोर विश्वास पद्धति और आचार-व्यवहारों को जन्म देते हैं जिनमें खुशहाली लाने का वायदा होता है और इसे माननेवालों में गहरी वचनबद्धता लाने की क्षमता रखते हैं। यह वचनबद्धता इतनी प्रबल होती है कि इसे न मानने वालों को उनके अधिकारों से ही वंचित कर दिया जाता है। इसलिए अक्सर कट्टरपंथ उग्र रूप धारण कर लेता है जहाँ हत्या करना और आंतक फैलाना सही माना जाता है। अंततः अपने लिए अलग देश की मांग करना (जैसे इस्राइल और खालिस्तान) अपने लक्ष्य को सही ठहराते हैं।

बॉक्स 1

जार्ज मार्सडेन ने अपनी पुस्तक **फंडामेंटैलिज्म एंड अमेरिकन कल्चर : द शेपिंग ऑफ ट्वेंटिथ सेंचुरी एवेन्जेलकैलियम 1870-1925**, में कट्टरपंथ के आरंभिक प्रयोग पर विस्तार से चर्चा की है।

उनके अनुसार ईसाई मत के कट्टरपंथी तत्वों की खोज करने के क्रम में अनेक पुस्तकें लिखी गईं और इन्हीं पुस्तकों में कट्टरपंथ, कट्टरपंथी आदि शब्दों का प्रयोग बार-बार हुआ। इन पुस्तकों में खासकर विज्ञान के विकासवाद के सिद्धांत, उदारवादी दर्शन और यहाँ तक कि उदारवादी धर्मशास्त्रों पर भी प्रहार किया गया। उनके अनुसार ये सब 'लोकप्रिय अमेरिकी संस्कृति' के प्रमुख तत्व 'संतों में निष्ठा के भाव' को नष्ट कर रहे हैं। इन कट्टरपंथियों का उद्देश्य अमेरिकी संस्कृति की पुरातनता को पुनर्जीवित करना था।

संक्षेप में कहा जाता तो, 1910-1915 के बीच **कट्टरपंथ** को केंद्र बनाकर बारह पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिन्हें कैलिफोर्निया के धनी भक्तों ने वित्तीय सहायता प्रदान की। इनका संपादन लोकप्रिय एवेंजेलिस्टों और शिक्षकों ने किया जो पंथ की आधारशिला के आधारभूत तथ्यों को खोजने का प्रयास कर रहे थे। लगभग तीस लाख प्रतियाँ वितरित की गईं। जब

इस वितरण के बावजूद जनता पर गंभीर प्रभाव नहीं पड़ा तब विभिन्न धार्मिक पुनरुत्थानवादी आंदोलनों के विश्लेषण के क्रम में कट्टरपंथी/ कट्टपंथ शब्दों का इस्तेमाल किया गया। (फ्राइकेनबर्ग, 1988 : 21-22)

15.3 ईरान में व्याप्त कट्टरपंथ (Fundamentalism in Iran)

इस अनुभाग में हमने ईरान में व्याप्त कट्टरपंथ की चर्चा की है। जैसा कि आप जानते होंगे, 1979 में ईरान के शाह का तख्ता पलट दिया गया था और उन्हें देश से भागने पर मजबूर कर दिया गया था। उनकी जगह अयातुल्लाह खोमैनी के नेतृत्व में इस्लामी तंत्र ने सत्ता की बागडोर संभाल ली थी।

इस घटना ने पूरे विश्व को स्तब्ध कर दिया था। व्यापक विदेशी समर्थन वाले इस एक सबसे मजबूत राजतंत्र को कुछ मुल्लाओं ने उखाड़ फेंका था। बहुतों ने तब यह अपेक्षा की थी कि इससे अफरा-तफरी मच जाएगी और इस्लामी शासन कुछ दिनों से अधिक नहीं चल पाएगा। लेकिन यह शासन चला। वे कौन से कारक थे जिन्होंने धर्म को राजनीति के केंद्र में ला दिया? क्या ईरान का यह इस्लामी कट्टरपंथ आधुनिकता से पलायन था ? क्या यह मध्य युग की ओर वापसी थी ? क्या यह रचनात्मक शक्ति बन सकी ?

आगे हम इन्हीं कुछ मुद्दों की चर्चा करेंगे। हम देखेंगे कि ईरान के हाल के इतिहास में किस प्रकार विदेशी वर्चस्व ओर स्थानीय निर्मम नेतृत्व का बोलबाला रहा। हम देखेंगे कि किस प्रकार अत्यंत विकृत रूप में विकास हुआ और अब हम यह भी देखेंगे कि सामाजिक प्रक्रिया में किस प्रकार धर्म ने अहम भूमिका निभाई है।

15.3.1 ईरान में राजतंत्र (The Monarchy in Iran)

ईरान के राजतंत्र का इतिहास 2500 वर्ष पुराना है। इसका अंत 17 फरवरी, 1979 को पहलवी वंश को उखाड़ फेंकने के साथ हुआ।

यहाँ हम तीन वंशों की चर्चा राजनीतिक संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता के कारण करेंगे।

i) अकेमिंड वंश (Acheminds Dynasty)– इस्लाम पूर्व युग में ईरान पर शासन करता था। इस वंश के दो शासक साइरस (553-521 ई.पू.) और डेरियस (521-496 ई.पू.) ने अपने साम्राज्य को उत्तर भारत से यूनान तक फैलाने का सपना देखा था। यह सपना उस समय चकनाचूर हो गया जब सिकंदर ने 321 ई.पू. में फारसी साम्राज्य को नष्ट कर दिया। पहलवी (Pahlavi) वंश के राजा इस्लाम पूर्व की फारसी सभ्यता से गूढ़ रूप से प्रभावित थे।

ii) साफ़ाविद् वंश (Safavid Dynasty) (550-1779) मध्ययुगीन ईरान पर राज्य करता था। इस्लाम उस समय प्रमुखता प्राप्त कर चुका था। साफविदों ने शिया धर्म को राज्य धर्म बनाया और ऑटोमन साम्राज्य से संबंध रखने वाले सुन्नी संप्रदाय का शुद्धिकरण किया। साफाविद और ऑटोमन साम्राज्य दोनों ने ही शिया-सुन्नी तनाव का लाभ उठाया। इस तरह उन्होंने दोनों संप्रदायों के बीच नफरत भड़का कर अपनी राजनीतिक ताकत को बढ़ाया।

   इस्लामी धार्मिक सत्ता पर नियंत्रण बनाने के लिए साफाविदों ने यह दावा किया वे पैगम्बर मोहम्मद के वंशज थे। इस तरह उन्होंने धार्मिक और राजनीतिक नेतृत्व दोनों को अपने हाथों में लेने का प्रयास किया। बाद में पहलवियों ने साफविदों के इसी खेल

को जारी रखते हुए इस्लाम को राजकीय धर्म बनाया और साथ ही इसकी ताकत को भी कम किया।

iii) कजार वंश (Qajar Dynasty) (1795-1924) के नेता सक्षम नहीं थे। उन्होंने जब चाहा तब अपने राजनीतिक प्रतिदंद्वियों की हत्या की। वे मनमानी ब्याज दरों पर ऋण देने और ईरान में अपने हितों को मजबूत करने वाली विदेशी ताकतों पर अत्यधिक निर्भर थे।

iv) पहलवी वंश (Pahlavi Dynasty) की जड़े कुलीनतंम में नहीं थी। इसके संस्थापक रज़ा खान सेना में कर्नल थे। उन्होने 1923 में कजार शाह सरकार का तख्ता पलटा और 1925 में ईरान के नए शाह बन गए।

आकेमिंड (Acheminds) वंश से प्रेरित हो कर उन्होंने अपने वंश का नाम 'पहलवी' रखा। यह पुराना फारसी नाम था। साफाविदों की परंपरा का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी इस्लाम को राजकीय धर्म बनाए रखा और साथ ही इसकी ताकतों पर लगाम लगाने का भी प्रयास किया। कज़ार वंश के पदचिह्नों पर चलते हुए, पहलवियों ने ईरान को विदेशी ताकतों पर और भी अधिक निर्भर कर दिया।

15.3.2 पश्चिम का प्रभाव (The Impact of the West)

पश्चिम एशिया के अन्य देशों की तरह ईरान में तेल पाए जाने से विदेशी ताकतों के आर्थिक हित उस ओर आकर्षित हुए। रूस और इंगलैंड, ईरान में आर्थिक और राजनीतिक वर्चस्व के लिए संघर्ष करने वाली प्रमुख ताकतें थीं। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश नौ सेना ने कोयले की जगह तेल का इस्तेमाल शुरू किया और ब्रिटिश शासक ईरान के संसाधनों का लाभ उठाने के लिए रणनीतियों की तलाश करने लगे।

ईरानियों के माध्यम से तेल का उत्पादन अच्छी खासी गति से बढ़ा, फिर भी ईरानी खुद उसका फायदा नहीं उठा सके। ईरान में भारी बेरोजगारी होने के बावजूद ईरान से मजदूर न लेकर इंगलैंड ने भारत से मज़दूर मंगवाए। सभी महत्वपूर्ण पदों पर ब्रिटिश लोगों को नियुक्त किया गया और कपड़ा, खाना, फल और सीमेंट जैसी उनकी जरूरत की सारी चीज़ें ईरानी व्यापारियों से न खरीद कर इंगलैंड से मंगवाई गईं। इस कारण ईरान में विदेशियों के प्रति काफी चिढ़ पैदा हो गई।

अंग्रेजों ने अपने हितों की रक्षा के लिए कर्नल रज़ा ज्ञान का समर्थन किया और उन्हें शाह (सम्राट) बनने में मदद की। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकियों ने ईरान में पैठ कर ली। उनकी तेल की जरूरत इंगलैंड से भी ज्यादा थी। इंगलैंड, अमेरिका तेल कंपनियों और पहलवियों ने एक दूसरे से सहयोग किया और आपस में एक समझौता किया। इस समझौते में कागजी तौर पर तो तेल उद्योग का स्वामी ईरान को रखा गया लेकिन वास्तव में इस उद्योग का पूरा नियंत्रण विदेशी हाथों में चला गया। तेल का उत्पादन, मूल्य निर्धारण और विपणन सभी कुछ विदेशी हाथों में था। ईरान को राजनीतिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर परेशानी उठानी पड़ी। विदेशी ताक़तों की दखलांदाजी का एक नतीजा यह हुआ कि ईरानी समाज के सभी तबकों में राष्ट्रवाद की भावना उभरने लगी। ईरानियों को विदेशी ताकतों के कारण स्वायत्तता से वंचित होने और शोषण के सिवाय कुछ न मिला।

पश्चिमी देशों के साथ संपर्क होने से धर्मनिरपेक्षता अथवा धर्म और राजनीति के अलगाव का विचार भी आया। इसके परिणामस्वरूप अध्ययन की अनेक संस्थाएं कायम हुई। 1851 में स्थापित होने वाला कला एवं विज्ञान संस्थान (दर-अल-फनून) इसका एक उदाहरण है।

अंग्रेजी और फ्रांसीसी के क्लासिक ग्रंथों का फारसी में अनुवाद हुआ और इसके आदर्शों का अग्रणी बौद्धिक वर्ग ने प्रचार किया।

पहलवी शासन के दौरान पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण के घोर प्रयास हुए। पश्चिमी वेशभूषा, अंग्रेजी और फ्रांसीसी के इस्तेमाल और पश्चिमी शिक्षा पर जोर दिया गया। रज़ा खान ने शैक्षिक और वैधानिक सुधारों के माध्यम से राजनीतिक तंत्र को धार्मिक प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास किया। 'मकतबों' (मस्जिदों स्कूलों) और मदरसों (धार्मिक स्कूलों) को राज्य के केंद्रीकृत नियंत्रण के अधीन कर दिया गया। यह इस्लामी परंपरा से बहुत हट कर था। 'शरीअत' या धार्मिक कानूनों की जगह'फ्रांसीसी नागरिक संहिता पर आधारित नई विधि संहिता लागू की गई। मोहम्मद रज़ा के शासन के दौरान, मौजूदा शिक्षा प्रणाली की समीक्षा का काम एक अमेरिकी फ़र्म को सौंपा गया।

पहलवी वंश के शासन का कुल परिणाम दो विरोधी वर्गों के जन्म के रूप में सामने आया। एक ओर तो ईरान में शिक्षित, धर्मनिरपेक्ष अभिजात वर्ग था और दूसरी ओर गरीब, वफादार मुसलमानों का वह जनसमूह था जिसका पश्चिमी शिक्षा प्राप्त युवकों की अपेक्षा गांव के मुल्लाओं में अधिक विश्वास था।

पहलवी वंश ने ईरान को वस्तुतः पश्चिम के हाथों में बेच दिया था। इसकी स्वदेशी प्रतिमा, परपंराओं और जीवन शैली को किनारे कर दिया गया था विशेषकर मोहम्मद शाह पहलवी ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को ऊपर से नीचे की ओर जबरन लागू करने का प्रयास किया। ये नीतियाँ विदेशी ताकतों के इशारे पर लागू की गई थी और अभिजात वर्ग के लाभ के लिए थी। मोहम्मद शाह पहलवी को उस बहुसंख्यक आबादी को अलग करने में सफलता मिली जो अपनी विरासत और मूल्यों के कहीं अधिक निकट थी। इस्लाम पुनर्जागरण ने यह विकल्प प्रदान किया।

15.3.3 ईरान में इस्लाम का पुनरुत्थान (The Resurgence of Islam in Iran)

बर्नार्ड लुईस के अनुसार, हमें अगर इस विषय में कुछ भी समझना है कि मुस्लिम जगत में क्या हुआ और क्या हो रहा है तो, हमें दो बुनियादी मुद्दों पर ध्यान देना होगा। पहला है, मुस्लिम लोगों की ज़िंदगियों में एक कारक के रूप में धर्म की सार्वभौमिकता; और दूसरा है उनके धर्म की निश्चितता।

लुईस के अनुसार, अंततः राज्य से अलग हो जाने वाले यहूदी और ईसाई धर्मों के विपरीत, इस्लाम, पैगम्बर मोहम्मद के जीवनकाल से ही राज्य का पर्याय रहा है। इस्लाम के इतिहास, अनुभव और पवित्र ग्रंथों से यही तथ्य उजागर होता है। मोहम्मद केवल पैगम्बर नहीं थे, वे सिपाही और राजनयिक भी थें, और उनके अनुयायियों का विश्वास था कि वे परमेश्वर के दैवीय विधान को समूची दुनिया में कायम करके उसे पसंद आने लायक हो सकते थे।

मुसलमानों का धर्म केवल सार्वभौमिक नहीं बल्कि इस अर्थ में केंद्रीय भी था कि यह अस्मिता और निष्ठा का आधार और आकर्षण केंद्र प्रदान करने वाला था। जैसा कि हम देख चुके हैं, ईरान में राजतंत्र ने इस्लाम को ईरानियों के जीवन में उसके महत्व के कारण और इस कारण भी समाप्त करने का प्रयास किया कि मुल्ला लोग उस किसी भी उपाय का विरोध करते थे जिनसे उनके विचार में दैवीय विधान का उल्लंघन हो सकता था।

इसी पृष्ठभूमि में हम 1979 में मोहम्मद रज़ा शाह के तख्ता पलटने की घटना को समझ सकते हैं, जैसा कि हम देख चुके हैं, शाह ने जनसाधारण को सफलतापूर्वक अलग-थलग

कर दिया। अपने शासन के दौरान, मस्जिद राजनीतिक असंतोष का एकमात्र शरण स्थान रह गई थी और लोग सहायता के लिए केवल धार्मिक संस्था की ओर जा सकते थे। आम लोगों से निकटता के कारण मुल्ला लोग शाह के विरूद्ध पनप रहे आक्रोश और कुंठा से अच्छी तरह परिचित थे। इसी विकट स्थिति में आयातुल्लाह खोमैनी (1900-1989) ने नेतृत्व प्रदान किया। खोमैनी ने वर्षों तक शाह की नीतियों और गतिविधियों का विरोध किया था। उनके 1964 के भाषण का अंश है :

"आप ईरान को आधुनिक बनाने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं जबकि आप बुद्धिजीवियों को कैद कर रहे हैं और उनकी हत्या कर रहे हैं ? ईरानियों को राज्य और अपने विदेशी मालिकों की सेवा में दब्बू, निरीह साधनों में बदलना चाहते हैं"।

15.3.4 इस्लामी मूल की ओर वापसी (A Return to Islamic Roots)

इस्लाम में सामाजिक न्याय (अदल्लाह) की धारणा गहराई तक बैठी है। शाह के शासनकाल में ईरान में जो संपदा की भारी विषमताएँ मौजूद थी वे बुनियादी संसाधनों की सामुदायिक साझेदारी की इस्लामी नीति के पूर्णतः विपरीत थीं।

ईरान में मौजूद भ्रष्ट राजनीतिक नेतृत्व और विकृत आर्थिक विकास को ध्यान में रखते हुए हमें यह बात समझ में आ सकती है कि इस्लाम को सामाजिक-आर्थिक न्याय लाने वाला विकल्प क्यों माना गयाः

इस्लामी कट्टरपंथ को आधुनिकता से पलायन के रूप में खारिज करना सरल बयानी होगी। इसके विपरीत, कुछ मुसलमान इस्लाम को सामाजिक न्याय पर आधारित सामाजिक-राजनीतिक बदलाव लाने वाले सार्थक माध्यम के रूप में देखते हैं दूसरी ओर, कुछ मुसलमान इस्लाम का आव्हान बदलाव रोकने के लिए भी करते हैं। ईरान और अन्य मुस्लिम राष्ट्रों के सामने चुनौती संतुलन बनाने की है, कि वे उन मूलभूत धार्मिक मूल्यों की ओर लौटें जो समाज के कल्याण के पोषक हैं, उसके कल्याण की दिशा में बाधक नहीं है।

बोध प्रश्न 1

i) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

क) साइरस................................वंश का प्रसिद्ध शासक था

ख) ....का 1979 में तख्ता पलट दिया गया।

ग) इस्लाम में अदाला (Adalah) अथवा..................की धारणा गहराई तक बैठी है।

ii) संक्षेप में उत्तर दीजिए :

क) ईरान में तेल की खोज के प्रभाव का वर्णन कीजिए। अपना उत्तर पांच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

ख) धर्मनिरपेक्षीकरण के पश्चिमी विचार ने ईरानी समाज पर क्या प्रभाव डाला? अपना उत्तर पांच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

15.4 अमेरिका में प्रोटेस्टैंट कट्टरपंथ (Protestant Fundamentalism in U.S.A.)

इससे पहले के अनुभाग में हमने एक ऐसे समाज में इस्लामी कट्टरपंथ के सिर उठाने के विषय में जानकारी प्राप्त की जिसका ध्रुवीकरण अभिजात वर्गीय सामाजिक-आर्थिक नीतियों के हाथों में था और जिसका शोषण उसकी तेल संपदा के लिए तमाम विदेशी ताकतों के हाथों हुआ। हमने देखा कि इस्लाम की सार्वभौमिकता और केंद्रीयता की धारणाओं ने किस प्रकार इस्लामी राज्य की स्थापना को संभव बनाया। हमने समूचे इस्लामी इतिहास में धर्म और सरकार की अस्मिता पर गौर किया। इस अनुभाग में हम अमेरिकी राजनीतिक जीवन एवं धार्मिक मूल्यों और अमेरिकी लोकतंत्र में मौजूद कट्टरपंथी आदर्शों के बीच के घनिष्ठ संबंध का अध्ययन करेंगे। इसे और अच्छे ढंग से समझने के लिए हम पहले अमेरिकी इतिहास की पृष्ठभूमि का विवरण देंगे। फिर हम उन धार्मिक अधिकार आंदोलनों की विवेचना करेंगे जिनसे यह प्रदर्शित होता है कि कट्टरपंथी धार्मिक मूल्य, किसी प्रकार अनेक रूपों में अमेरिका के सामान्य और धार्मिक जीवन में व्याप्त रहे।

15.4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (The Historical Background)

ईसाई धर्म का राज्य के साथ संबंध अत्यंत स्पष्ट रहा है। ईसाई धर्म के प्रारंभिक वर्षों में इसके अनुयायियों को प्रताड़ित किया गया। इसने अपने आप को यूरोप के बहुसंख्यक धर्म के रूप में स्थापित कर लिया, उसके बाद भी प्रशासन के साथ इसकी अस्मिता कभी पूर्ण नहीं रही। वास्तव में चर्च और राज्य का अंतर या अलगाव यूरोपीय इतिहास की एक विशेषता है।

सोलहवीं शताब्दी में प्रोटेस्टैंटवाद के उदय न ईसाई रूढ़िवादी परंपरा को चुनौती दी। उस समय उभरने वाले प्रोटेस्टैंट मतों ने चर्च द्वारा एकत्र अपार संपदा की ओर अंगुलि उठाई। यह पवित्र ग्रंथ बाइबिल की ओर वापसी का संकेत था और इसमें पादरियों की भूमिका पर प्रहार किया गया था। अधिकांश प्रोटेस्टैंट मतों ने किसी मध्यस्थ की भूमिका के बिना परमेश्वर और भक्त के बीच प्रत्यक्ष संबंध की हिमायत की। बड़ी तादाद में प्रोटेस्टैंट लोग ब्रिटेन के तटों को छोड़ अमेरिकी उपनिवेशों में जा बसे जहाँ वे शांतिपूर्वक अपने धर्म का पालन कर सकते थे। कालांतर में अमेरिका ने अपने आप को ब्रिटिश राज से आजाद कर लिया और संयुक्त राज्य अमेरिका का जन्म हुआ।

विगत दो शताब्दियों में अमेरिका धर्मों और संस्कृतियों का संगम बन गया है। पूरी दुनिया में बेहतर जीविका की तलाश करते लोगों या धार्मिक और/अथवा जातीय उत्पीड़न के शिकार लोगों ने अमेरिका को अपना घर बनाया है।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक "महाशक्ति" बन गया। यह प्राकृतिक संसाधनों, प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षित मानवशक्ति की दृष्टि से अत्यधिक संपन्न है। इसके नागरिकों का जीवन स्तर ऊँचा है। अमेरिका में 'धर्म का अनुपालन व्यक्तिगत स्तर पर होता है। इतनी अधिक कौमों और संस्कृतियों की भूमि होने के कारण धार्मिक बहुलवाद अमेरिकी लोकाचार का एक अंग रहा है।

बॉक्स 2

अमेरिका के धार्मिक जीवन की एक दिलचस्प विशेषता है वहां की धार्मिक एकजुटता का ऊँचा स्तर या अनेकानेक मतों और संप्रदायों तक इसकी पहुँच। अमेरिका में एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों का अलग-अलग चर्चों या संप्रदायों से संबद्ध होना आम बात है। उदाहरण के लिए, मां बैपटिस्ट हो सकती है, पिता पेंटीकोस्टल, पुत्र बौद्ध हो सकता है तो पुत्री नास्तिक।

यहाँ यह बात गौर करने लायक है कि अमिश और मोरमोन जैसे कुछ समुदाय भी हैं जिनके लिए धर्म सामुदायिक जीवन का आधार रहा है। उन्होंने उत्साहपूर्वक अपने मूल्यों और जीवनशैलियों की रक्षा की है और अपनी जीवन पद्धति को हानि पहुंचाने वाले किसी भी बाहरी प्रभाव को टाला है और उसका विरोध किया है।

इस पृष्ठभूमि के कारण आप को शायद यह बात आसानी से समझ में नहीं आएगी कि 1970 के दशक के अंत में अमेरिका में एक दक्षिणपंथी, संकीर्णतावादी (अनुदार) आंदोलन उभरा। इसके प्रवक्ता टी.वी. और रेडियों पर अपना संदेश प्रसारित करने वाले कुछ प्रचारक थे। उन्होंने लाखों अमेरिकियों को आकर्षित कर लिया, और इन अमेरिकियों ने उनके विशेष कार्य के लिए बड़ी-बड़ी रकमें दान में दी। शीघ्र ही ये प्रचारक टी.वी. चैनलों, प्रकाशन गृहों, स्कूलों और उच्चतर ज्ञान के केंद्रों के स्वामी बन गए। जनसंचार के माध्यमों के नियंत्रण और प्रयोग के कारण उनकी प्रचार पद्धति का नाम "टेलीविज़न प्रचार पद्धति" पड़ गया। अब हम इस प्रकार की प्रचार पद्धति का अध्ययन करेंगे।

15.4.2 "नव धार्मिक अधिकार आंदोलन"

अमेरिका में हाल के संकीर्णतावादी प्रोटेस्टैंट कट्टरपंथी आंदोलन के अपने अध्ययन में वाल्टर कैप्स (1990) ने इसकी मुख्य विशेषताएँ बताई हैं।

i) नव धार्मिक अधिकार आंदोलन ने व्यक्तिगत पवित्रता और राष्ट्रीय देशभक्ति के बीच संबंध की बात करके राष्ट्र का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इस आंदोलन ने बाइबिल के सिद्धांतों की तुलना लोकतांत्रिक समाज की आदर्शों से की। इसने अमेरिका को "ईसाई राष्ट्र" के रूप में देखा और धार्मिक मूल्यों और राजनीतिक प्रतिबद्धता को मिलाने का प्रयास किया। इसी कारण इसे अमेरिकी नागरिक धर्म के संकीर्णतावादी संस्करण का रूप मिला।

ii) इस आंदोलन का यह विश्वास था कि धर्म और देशभक्ति साथ-साथ चलते हैं, इसलिए इसने धर्म को सार्वजनिक जीवन से दूर व्यक्तिगत दायरे में रखने वाले उदारवादी या प्रगतिशील विचारों को खारिज या अस्वीकार कर दिया। संकीर्णतावादी धार्मिक नेताओं का मानना था कि उदारवाद कमज़ोर और बेअसर था और राष्ट्र की शक्ति को सोखने वाला था। धार्मिक विश्वास के बिना अमेरिकी समाज के पुनःसशक्त होने की आशा नहीं की जा सकती।

iii) इस आंदोलन ने पितृसत्तात्मक मूल्यों पर ज़ोर दिया। इस आंदोलन ने ठीक उसी समय महत्ता हासिल की जब अमेरिकी समाज के पितृसत्तात्मक व्यवस्थापन को चुनौती दी जा रही थी। पुरुषों और स्त्रियों की भूमिकाओं के प्रति अभिवृत्तियाँ तो बदल ही रही थीं। परिवार के प्रतिमान भी बदल रहे थे। केवल मां या केवल पिता वाले परिवार, बिना विवाह के साथ-साथ रहने बाले जोड़े और समलैंगिक संबंध सामाजिक परिदृश्य की आम प्रवृत्ति बन गए थे। आंदोलन के अधिकांश उपदेश पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों की पवित्रता, गर्भपात, नारी स्वतंत्रता, समलैंगिकता और अश्लील साहित्य के संबंध में थे जिनसे राष्ट्रीय मूल्यों और एकजुटता को क्षति पहुंच रही थी।

iv) आंदोलन का एक नारा था "अमेरिका को फिर वापस लाओं"। इस संबंध में, क्लिफोर्ड ग्यर्टस की धर्म के सामाजिक प्रकार्यों की परिभाषा महत्वपूर्ण हो जाती है। ग्यर्टस अनेक और जटिल तरीकों की बात करता है जिनसे धार्मिक अभिप्रेरणाएं और आकांक्षाएं मिल कर किसी समाज के अंदर संसक्ति और संश्लेषण की रचना करती हैं। नव धार्मिक अधिकार आंदोलन जानबूझ कर और सचेत होकर एक अपेक्षाकृत सुखी और बीते युग की बात करता है जब सामाजिक संसक्ति आस्तित्व में थीं, और साझे धार्मिक और देशभक्ति आदर्श एक ही थे।

नव धार्मिक अधिकार आंदोलन के उपदेश बहुधा उन तमाम शक्तियों की निंदा और भर्त्सना का रूप ले लेते हैं जिन्होंने अमेरिकी समाज की एकता और संसक्ति को अस्त व्यस्त या नष्ट कर दिया। उनके अनुसार, इस प्रकार की चिंता केवल तभी वापस लाई जा सकती है जब धर्म एक बार फिर सार्वजनिक जीवन की महत्वपूर्ण शक्ति बन जाए।

v) नव धार्मिक अधिकार आधुनिकता के कुछ पहलुओं का विरोध करता है। नया, संकीर्णतावादी आंदोलन इस तथ्य से परिचित है कि अमेरिकी समाज की धर्मनिरपेक्षीकरण करने वाली प्रवृति धर्म को व्यक्तिगत दायरे में धकेल रही है। इन संकीर्णतावादियों के अनुसार अमेरिकी नागरिकों के पवित्र मूल्यों को आधुनिकता की शक्तियाँ क्षति पहुँचा रही थी। अमेरिका समाज "उच्छृंखल" हो गया है, यह परमेश्वर के बताए मार्ग से हट गया है।

vi) पहले अमेरिका के धार्मिक संकीर्णतावाद और धुर दक्षिणपंथी समूहों की अभिव्यक्ति न्यूनतम होती थी। इसे बुद्धिजीवी विरोध और राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाने की प्राथमिकता दी जाती थी। वे अपने आप को राष्ट्रीय मुख्यधारा के बाहर मानते थे और वहीं रहना पसंद करते थे। इसके अत्यंत विपरीत, नव धार्मिक अधिकार आंदोलन ने राष्ट्रीय मुख्यधारा का अंग बनने की कोशिश की है। आंदोलन की आकांक्षा है कि उसे बुद्धिजीवी स्तर पर गंभीरता से लिया जाए। इसके एक अत्यंत प्रभावशाली प्रचारक फैरी फालवेल ने लिबर्टी यूनिवर्सिटी नाम के एक कालेज की स्थापना की है और उसका दावा है कि यह अमेरिका के सर्वश्रेष्ठ कालेजों में है।

vii) इसके अतिरिक्त, नव धार्मिक अधिकार आंदोलन खुले और सुविचारित तौर पर राजनीतिक मानसिकता वाला आंदोलन है। इसे रोनाल्ड रीगन प्रशासन (सरकार) का सरंक्षण प्राप्त था और यह राष्ट्रपति के आने वाले चुनावों के लिए प्रत्याशी भी तैयार कर रहा था। इसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का स्रोत इस विश्वास का था कि समाज में नई शक्ति फूंकने के लिए धर्म की आवश्यकता थी, कि धार्मिकता और देशभक्ति एक ही बात थी और अमेरिका को उच्छृंखलता से मुक्ति दिलाना अनिवार्य था।

viii) जैसा कि पहले बताया जा चुका है, नव धार्मिक अधिकार आंदोलन के व्यापक संपर्क और प्रभाव का श्रेय जनसंचार के माध्यमों को जाता है। यह महत्वपूर्ण है कि फेरी

फ़ालवेल, पैट रॉबर्टसन, फिम और टैमैसी बेकर जैसे उसके महत्वपूर्ण नेता कुशल टी.वी संदेश प्रसारक थे। रोनाल्ड रीगन को "महान संदेश प्रसारक कहा जाता था, और जैसे उन्होंने टेलीविजन का इस्तेमाल अपने अत्यंत महत्वपूर्ण संदेशों को प्रसारित करने के लिए किया, वैसे ही नव धार्मिक अधिकार आंदोलन ने टी.वी. का इस्तेमाल प्रसारण के प्रमुख साधन के रूप में किया जिसके माध्यम से उसने अपनी विचारधारा से संबंधित संदेशों का प्रसारण किया। यह आंदोलन राष्ट्रवासियों की बैठकों तक पहुंच गया है, जहाँ पारिवारिक मूल्यों पर इसके ज़ोर की गूंज दर्शकों के हृदयों में प्रतिध्वनित हुई है।

नव धार्मिक अधिकार आंदोलन के समर्थकों ने एक विशिष्ट धार्मिक विश्व दर्शन को अपनाया है जिसका प्रसारण उन्होंने बाइबिल से लिए गए बिम्बों और कथाओं के माध्यम से किया है। बाइबिल को इस संदर्भ में पूर्ण सत्य का स्रोत माना गया है। इस प्रवृत्ति के कारण अन्य विश्व विचारों को बढ़ावा मिलता है। बाइबिल के आदेशों और अमेरिकी जीवन शैली के लिए खतरा बनने वाली षड्यंत्रकारी प्रवृत्तियों का पता लगा कर उनकी निंदा की जाती है। विश्व की स्थितियों या तत्वों को एक दूसरे की विरोधी शक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कोई चीज़ या स्थिति या तो अच्छी होती है या बुरी, वह प्रकाश का प्रतीक होती है अथवा अधंकार का, सत्य को साकार करती है या असत्य का उनकी दृष्टि में कोई मध्य मार्ग नहीं होता।

अमेरिका को परमेश्वर की चुनी हुई भूमि और अमेरिकियों को परमेश्वर के चुने हुए लोग बताया जाता है। बाइबिल को इस प्रकार पढ़ना समकालीन राजनीतिक टिप्पणी का आधार बन जाता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के प्रति स्पष्ट अभिवृत्तियों को बाइबिल से लिया जाता है। इस तरह, इस आंदोलन ने अपने आप को राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन के केंद्र के निकट कर दिया है।

ix) यह आंदोलन अमेरिकी संस्कृति की अनेकरूपता को क्षति पहुंचाता है। जैसे कि पहले चर्चा की जा चुकी है, अमेरिकी संस्कृति का पोषण अनेक और विविध जातीय और धार्मिक धाराओं ने किया है। अनेकरूपता विश्वासों और नीतिगत मापदंडों को प्रोत्साहित करती है। लेकिन, संकीर्णतावादी आंदोलन समग्रता के पक्ष में तर्क देता है। इसके अनुसार एकमात्र प्रोटेस्टैंट ईसाई जीवन शैली ही अमेरिकी लोकतंत्र से मेल खाती है। मनुष्यों को उपलब्ध धार्मिक अनुभवों की विविधता की प्रशंसा करने के बजाय यह आंदोलन सही शिक्षा, सही मूल्यों और एक विशिष्ट प्रोटेस्टैंट जीवन शैली का प्रचार करता है। यह बाहरी प्रभावों को विशिष्ट अमेरिकी ज़ीवन शैली के लिए खतरा समझता है। संक्षेप में, ये थीं विशेषताएँ उन नए प्रकार के संकीर्णतावादी प्रोटेस्टैंट कट्टरपंथ की ज़ो 1970 के दशक के अंत में और 1980 में पूरे अमेरिका में फैल गया था।

आप "नागरिक धर्म" के विषय में रॉबर्ट बेला के विचार पढ़ ही चुके हैं। अपने लेख "सिविल रिलिजन इन अमेरिका" (अमेरिका में नागरिक धर्म) में बेला ने दावा किया है कि "अमेरिका में चर्चों से बिल्कुल भिन्न एक विस्तृत और सुसंस्थापित नागरिक धर्म वास्तव में मौजूद है।" उसने इसे "अमेरिकी जीवन शैली का धर्म" कहा है। उसने अपने कथन के संदर्भ में कट्टरपंथ को अप्रासंगिक बताते हुए खारिज कर दिया। लेकिन कैप्स के अनुसार, नव धार्मिक अधिकार आंदोलन के धर्म ने अमेरिकी जीवन और लोकतंत्र के मूल्यों के साथ अपने मूल्यों का घनिष्ठ संबंध स्थापित करके एक नागरिक धर्म का दर्जा हासिल करने की कोशिश की है।

इस अनुभाग के प्रारंभ में हमने यह विवरण दिया था कि कैसे धर्मनिरपेक्षीकरण अमेरिकी समाज के लगभग प्रत्येक पहलू में व्याप्त था। विरोधाभास है कि यह

इससे यह उदाहरण स्थापित होता है कि धर्मनिरपेक्षीकरण जीवन की धार्मिक अंतरधारा को नकार नहीं सकता। रिचले ने अपनी पुस्तक **"रिलिजन इन अमेरिकन पब्लिक लाइफ"** (1985) में यह विचार रखा है कि अमेरिकी लोकतंत्र और अमेरिकी जीवशैली की शक्ति के लिए धार्मिक मूल्य अनिवार्य हैं।

बोध प्रश्न 2

i) अमेरिका में धार्मिक एकजुटता से आप क्या समझते हैं ? अपना उत्तर पांच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

ii) नव धार्मिक अधिकार आंदोलन ने देशभक्ति को किस प्रकार पवित्रता के समतुल्य समझा? अपना उत्तर पाँच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

iii) नव धार्मिक अधिकार आंदोलन का "अमेरिका को वापस लाओ" नारे से क्या अभिप्राय था? अपना उत्तर पाँच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

15.5 सारांश

इस इकाई में हमने कट्टरपंथ की विवेचना की। कट्टरपंथ का शाब्दिक अर्थ है धर्म के मौलिक या अनिवार्य सत्य में विश्वास–जिस तरह इसका उदय हुआ और जिस तरह ईरान और अमेरिका में इसका व्याप्त होना समझा जाता है। ईरान को अक्सर पश्चिमी आधुनिकता के विरूद्ध, पुनरुत्थान के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। दूसरी ओर अमेरिका को किसी भी तरह से कट्टरपंथी राज्य बताना कठिन है।

इस इकाई में हमने उस पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने की कोशिश की है जिसमें इस्लामी

मामले में धार्मिक जड़ों की ओर लौटना अक्सर अलगाव या जड़विहीनता के बोध के कारण होता है। जैसा हमने देखा, आधुनिकता ईरानी समाज में न केवल आर्थिक असमानता बल्कि सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और नैतिक असमानता भी लेकर आई, इसलिए कट्टरपंथी राज्य के लिए उठने वाले आग्रह का जनसाधारण में स्वागत हुआ।

अमेरिका का दक्षिणपंथी धार्मिक आंदोलन भी जड़विहीनता के ऐसे ही बोध पर टिका है। इस असुरक्षा की भावना का लाभ कट्टरपंथ के हिमायती, अक्सर ही उठाते हैं, वे चाहे ईरान में हों या अमेरिका में।

15.6 शब्दावली

पादरी (Clergy)	:	धार्मिक पद पर नियुक्त व्यक्ति। वे विद्वान् और ज्ञानवान बताए जाते हैं।
संसक्ति (Cohesion)	:	व्यक्तियों को एकजुट करने वाली एकता का बोध
संकीर्णता (Conservative)	:	परिवर्तन और प्रवर्तन के प्रति रूचि न रखने की प्रवृत्ति।
उदार (Liberal)	:	खुली मानसिकता वाला, परंपराओं से मुक्त।
राजतंत्र (Monarchy)	:	एक किस्म की सरकार जिसका प्रमुख वंशगत होता है, और उसके पास पूर्ण अधिकार होते हैं।
राष्ट्रवाद (Nationalism)	:	ऐसे विचारों में विश्वास और प्रचार करना, जिनसे राष्ट्र की एकता और राष्ट्रीय हित को बल मिलता है।
रूढ़िवाद (Orthodoxy)	:	स्थापित सिद्धांतों या मतों में विश्वास।
प्रोटेस्टैंटवाद (Protestantism)	:	रोमन कैथोलिक धर्म के विरोधस्वरूप 1529 में उभरने वाला नया धर्म। इस धर्म का विश्वास पोप और संतों की सहायता के बिना परमेश्वर और मनुष्य के बीच प्रत्यक्ष संबंध में था
धर्मनिरपेक्षीकरण (Secularisation)	:	राजनीतिक और नागरिक जीवन से धर्म को अलग करने वाली प्रक्रिया।
सार्वभौमिकता (Universality)	:	एक ऐसी स्थिति जिसमें सभी लोग, बिना किसी अपवाद के प्रभावित होते हैं।

15.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

कैप्स, वाल्टर एच. (1990) *'दि न्यू रिलिजस राइट'*– यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ कैरोलिना प्रेस, कोलंबिया, एस. क्रोलिना।

कर्टिस, माइकेल (1981) *'रिलिजन एंड पॉलिटिक्स इन द मिडिल ईस्ट'* – वेस्टव्यू प्रेस, बोल्डर, कोलरैडो।

हुसैन, असत (1985) *'इस्लामिक ईरान – रिवोल्यूशन एंड काउंटर रिवोल्यूशन'*, लंदन : फ्रांसेस प्रिंटर लि.।

15.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति

   क) साइरस **आकेमिंड** वंश का प्रसिद्ध शासक था

   ख) ***मोहम्मद रज़ा शाह*** का 1979 में तख्ता पलट दिया गया।

   ग) इस्लाम में 'अदाला' अथवा **सामाजिक न्याय** की धारणा गहराई तक बैठी है।

2) क) ईरान में तेल की खोज ने विदेशी ताकतों की दिलचस्पी ईरान की ओर पैदा की। ईरान में आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व के लिए संघर्ष करने वाली मुख्य ताकतें रूस और इंगलैंड थीं : ईरान में तेल का उत्पादन काफी बढ़ जाने के बावजूद ईरानी स्वयं उसका लाभ नहीं उठा सके। बेरोज़गारी के बावजूद तेल मजदूरों को ईरान से न लेकर बाहर से बुलाया गया। सभी महत्वपूर्ण पद अंग्रेजों के पास रहें बाद में अमेरिकी भी आ गए। इंगलैंड, अमेरिका और पहलवियों ने मिल कर समझौता कर लिया, जिसमें कागज़ी तौर पर तेल उद्योग का स्वामित्व ईरान को दे दिया गया, लेकिन व्यवहार में तेल उद्योग का पूरा नियंत्रण विदेशी ताकतों के हाथों में गया। उत्पादन, मूल्य निर्धारण और विपणन सभी कुछ विदेशी ताकतों के हाथों में रहा। ईरान को कुल मिलाकर राजनीतिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर हानि ही हुई।

   ख) पश्चिमी देशों के साथ अन्योन्यक्रिया से धर्मनिरपेक्षीकरण के विचारों का भी ईरान में प्रवेश हुआ। इस विचार में धर्म और राजनीति को अलग रखने की धारणा थी। इसके परिणामस्वरूप कला एवं विज्ञान संस्थान (1851) जैसी ज्ञान की अनेक संस्थाओं की स्थापना हुई। वाल्तेयर, रूसो, मांटेस्क्यू, बेंथम आदि के विचारों का प्रमुख बुद्धिजीवियों ने प्रचार किया। पहलवी राजा शाह रज़ा खान ने शैक्षिक और कानूनी सुधारों के माध्यम से राजनीतिक तंत्र को धर्म के प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास किया। 'मकतब' (मस्जिदी स्कूल) और 'मदरसा' (धार्मिक स्कूल) को राज्य के केंद्रीकृत नियंत्रण में ले लिया गया। शरियत अथवा धार्मिक कानूनों के स्थान पर फ्रांसीसी नागरिक संहिता पर आधारित एक नई कानून संहिता को लागू किया गया। यह इस्लामी परंपरा से बिल्कुल हट कर था।

बोध प्रश्न 2

i) अमेरिका में धार्मिक जीवन की एक दिलचस्प विशेषता ऊँचे स्तर की धार्मिक एकजुटता, या व्यापक मतों और संप्रदायों तक उनकी पहुंच रही है। वहाँ एक ही परिवार के सदस्यों का विभिन्न चर्चों या संप्रदायों से जुड़ा होना असामान्य नहीं है।

ii) व्यक्तिगत पवित्रता और राष्ट्रीय देशभक्ति के बीच संबंध बाइबिल के सिद्धांतों और लोकतांत्रिक समाज के आदर्श की तुलना से बना। इसने अमेरिका को "ईसाई राष्ट्र" बना दिया और धार्मिक मूल्यों तथा राजनीतिक प्रतिबद्धता को मिलाने का प्रयास किया।

iii) नव धार्मिक अधिकार आंदोलन जानबूझ कर और सचेत होकर उस सुखमय, पूर्ववर्ती युग की बात करता है जब सामाजिक संसक्ति मौजूद थी; जिस युग में साझे धार्मिक और देशभक्ति आदर्श एक ही थे। नव धार्मिक अधिकार आंदोलन के उपदेश अक्सर उन कारकों की निंदा या भर्त्सना करते हैं जिसने अमेरिकी समाज की एकता और संसक्ति को अस्त-व्यस्त या नष्ट किया। इस तथ्य को स्पष्ट करने वाला एक नारा